Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 6, August-2018, ISSN 2230-7540

शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन

Nirmal Chand Pandey[1]* Dr. Ashih Yadav[2]

[1] Research Scholar, Department of Sociology, Swami Vivekanand University, Sagar (M.P.)

[2] Associate Professor, Department of Sociology

सारांश – ***शोध क्षेत्र के 71.75 प्रतिशत नागरिकों का यह मानना है, कि शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में सकारात्मक परिवर्तन आये हैं तथा 20.00 प्रतिशत नागरिकों का यह मानना है, कि शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में सकारात्मक परिवर्तन नहीं आये हैं। जबकि शोध क्षेत्र के 8.25 प्रतिशत नागरिकों का यह मानना है, कि शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में कोई परिवर्तन नहीं आये हैं। शोध क्षेत्र के 85.00 प्रतिशत समाजसेवियों का यह मानना है, कि शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में सकारात्मक परिवर्तन आये हैं तथा 9.50 प्रतिशत समाजसेवियों का यह मानना है, कि शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में सकारात्मक परिवर्तन नहीं आये हैं। जबकि शोध क्षेत्र के 5.50 प्रतिशत समाजसेवियों का यह मानना है, कि शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में कोई परिवर्तन नहीं आये हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में सकारात्मक परिवर्तन आये है।***

----------X----------

प्रस्तावना:

शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन का घनिष्ठ सम्बंध है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन के लिए भूमिका तैयार करें। यही नहीं, शिक्षा इस बात का भी स्पष्टीकरण करे कि समाज में किस प्रकार का परिवर्तन लाया जाये। इस महान् कार्य को पूरा करने के लिए शिक्षा को समाज की विभिन्न क्षेत्रीय समस्याओं का समय-समय पर अध्ययन करके समाज का अभिन्न अंग बन जाना चाहिये। जब शिक्षा उक्त सभी बातों को पूरा करती रहेगी तो समाज के विभिन्न बात कुछ उल्टी दिखाई पड़ती है। देखने में यह आता है कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन नहीं लाती अपितु सामाजिक परिवर्तन के पीछे-पीछे चलती है। दूसरे शब्दों में, जब प्रविधियों, आवश्यकताओं तथा मूल्यों में परिवर्तन होने लगता है तो शिक्षा भी अपने आपको उन्हीं के अनुसार बना लेती है। शिक्षा समाज की आवश्यकताओं को पूरा करती है तथा ऐसे विचारों का प्रसार करती है जिनके द्वारा समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक प्रकार के परिवर्तन होते रहें। दूसरे शब्दों में, शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसकी सहायता से समाज अपने बालकों को वैसा ही बना लेता है जैसा कि वह उन्हें बनाना चाहता है। इसलिए प्रत्येक समाज अपनी-अपनी आवश्यकताओं तथा आकांक्षाओं क्षेत्रों में आवश्यकतानुसार समय-समय पर अनेक प्रकार के परिवर्तन होते रहेंगे। इससे समाज उन्नति की ओर बढ़ता रहेगा। पर के अनुसार शिक्षा की व्यवस्था करता है। समाज में कुछ शाश्वत मूल्य होते हैं। इन स्थायी मूल्यों के बल पर समाज स्थायित्व प्राप्त करता है। राल्फ लिन्टन ने इस सिद्धान्त पर प्रकाश डालते हुए बताया है कि जब कभी सामाजिक परिवर्तन के कारण उक्त सामाजिक मूल्यों में दुर्बलता आने लगती है तो समाज पतन की ओर अग्रसर होने लगता है। ऐसे समय पर शिक्षा इन शाश्वत मूल्यों की रक्षा करती है, इन्हें सामाजिक परिवर्तन के बुरे प्रभावों से बचाती है तथा लोगों को इनके सम्बंध में इस प्रकार से ज्ञान देती है कि उनका इन मूल्यों में विश्वास भी बना रहे और वे सामाजिक परिवर्तन को स्वीकार भी करते रहें। हमारे समाज में सत्य, अहिंसा, सहानुभूति, सहयोग तथा सौहार्द आदि अनेक शाश्वत मूल्य पाये जाते हैं। शिक्षा इन सभी मूल्यों की रक्षा करे तथा इन्हें प्रत्येक बालक में विकसित करती है। शिक्षा सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिये नई-नई विचारधाराओं, आन्दोलनों तथा सामाजिक परिवर्तनों को जन्म देती है। उदाहरण के लिये, भारतीय समाज में बाल-विवाह, विधवा-विवाह तथा सती प्रथा आदि आन्दोलनों के परिणामस्वरूप ही अनेक सामाजिक परिवर्तन हुए। शोधार्थी का मुख्य उद्देश्य शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में आये परिवर्तनों की वास्तविक स्थिति का अध्ययन करना है।

शोध विधि एवं शोध उपकरण:

शोधार्थी ने अपने शोध अध्ययन हेतु इलाहाबाद जिले के सभी बीसों विकासखण्डों - बहादुरपुर, बहरिया, चाका, धनुपुर,

www.ignited.in

हण्डिया, होलागढ़, जसरा, करछना, कौड़िहार, कौंधियारा, कोरॉव, माण्डा, मऊआइमा, मेजा, फूलपुर, प्रतापपुर, सैदाबाद, शंकरगढ़, सोरॉव एवं उरूवा में से प्रत्येक विकासखण्ड से 20-20 सामान्य नागरिकों, कुल 400 नागरिकों तथा 10-10 समाजसेवियों, कुल 200 समाजसेवियों, को विस्तृत शोध सर्वेक्षण हेतु न्यादर्श में चयनित किया गया है। शोधार्थी द्वारा सभी न्यादर्शों का चयन दैव-निदर्शन विधि से किया गया है।

इलाहाबाद जिले में शिक्षा के प्रभाव से समाज के जीवन-व्यवहार एवं सामाजिक सम्बन्धों में आये परिवर्तनों की वास्तविक स्थिति के अध्ययन हेतु शोधार्थी ने 'सर्वेक्षण विधि', 'अवलोकन विधि' एवं 'अभिलेख अध्ययन' विधि का प्रयोग किया है तथा शोध उपकरण के रूप में स्व-निर्मित 'समाजसेवी साक्षात्कार अनुसूची' तथा 'सामान्य नागरिक साक्षात्कार अनुसूची' आदि का प्रयोग किया गया है तथा शोध उपकरणों के माध्यम से संकलित प्रदत्तों के सारणीयन, विश्लेषण एवं व्याख्या द्वारा वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त की, जिनका विवरण निम्नानुसार है -

तालिका क्रमांक - 1

शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में आये परिवर्तनों का अध्ययन

(आधार - नागरिक साक्षात्कार अनुसूची)

क्र0	विकासखण्डों के नाम	न्यादर्श में चयनित नागरिकों की संख्या	शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में					
			सकारात्मक परिवर्तन आये हैं		सकारात्मक परिवर्तन नहीं आये हैं		कोई परिवर्तन नहीं आये हैं	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	बहादुरपुर	20	16	80.00	03	15.00	01	5.00
2.	बहरिया	20	14	70.00	04	20.00	02	10.00
3.	चाका	20	16	80.00	03	15.00	01	5.00
4.	धनुपुर	20	13	65.00	05	25.00	02	10.00
5.	हण्डिया	20	15	75.00	03	15.00	02	10.00
6.	होलागढ़	20	16	80.00	02	10.00	02	10.00
7.	जसरा	20	12	60.00	06	30.00	02	10.00
8.	करछना	20	14	70.00	05	25.00	01	5.00
9.	कौड़िहार	20	13	65.00	05	25.00	02	10.00
10.	कौंधियारा	20	15	75.00	04	20.00	01	5.00
11.	कोरॉव	20	16	80.00	03	15.00	01	5.00
12.	माण्डा	20	14	70.00	04	20.00	02	10.00
13.	मऊआइमा	20	11	55.00	06	30.00	03	15.00
14.	मेजा	20	15	75.00	03	15.00	02	10.00
15.	फूलपुर	20	16	80.00	03	15.00	01	5.00
16.	प्रतापपुर	20	13	65.00	06	30.00	01	5.00
17.	सैदाबाद	20	15	75.00	03	15.00	02	10.00
18.	शंकरगढ़	20	14	70.00	04	20.00	02	10.00
19.	सोरॉव	20	13	65.00	05	25.00	02	10.00
20.	उरूवा	20	16	80.00	03	15.00	01	5.00
	योग	400	287	71.75	80	20.00	33	8.25

विश्लेषण एवं व्याख्या (तालिका क्रमांक 1)

उपरोक्त तालिका क्रमांक 1 में शोध क्षेत्र इलाहाबाद जिले के न्यादर्श में चयनित नागरिकों से साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में आये परिवर्तनों की जानकारी हेतु प्रदत्तों का संकलन किया गया है।

उपरोक्त तालिका क्रमांक 1 के आँकड़े यह दर्शाते हैं, कि शोध क्षेत्र के न्यादर्श में चयनित कुल 400 नागरिकों में से 287 नागरिकों का यह मानना है कि शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में सकारात्मक परिवर्तन आये हैं तथा 80 नागरिकों का यह मानना है, कि शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में सकारात्मक परिवर्तन नहीं आये हैं, जबकि 22 नागरिकों का यह मानना है, कि शिक्षा कारण सामाजिक मूल्यों में कोई परिवर्तन नहीं आये है। इससे यह स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र के 71.75 प्रतिशत नागरिकों का यह मानना है, कि शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में सकारात्मक परिवर्तन आये हैं तथा 20.00 प्रतिशत नागरिकों का यह मानना है, कि शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में सकारात्मक परिवर्तन नहीं आये हैं। जबकि शोध क्षेत्र के 8.25 प्रतिशत नागरिकों का यह मानना है, कि शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में कोई परिवर्तन नहीं आये हैं।

तालिका क्रमांक - 2

शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में आये परिवर्तनों का अध्ययन

(आधार - सामाजसेवी साक्षात्कार अनुसूची)

क्र0	विकासखण्डों के नाम	न्यादर्श में चयनित समाजसेवियों की संख्या	शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में					
			सकारात्मक परिवर्तन आये हैं		सकारात्मक परिवर्तन नहीं आये हैं		कोई परिवर्तन नहीं आये हैं	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	बहादुरपुर	10	08	80.00	01	10.00	01	10.00
2.	बहरिया	10	07	70.00	02	20.00	01	10.00
3.	चाका	10	09	90.00	01	10.00	00	00.00
4.	धनुपुर	10	08	80.00	02	0.00	00	00.00
5.	हण्डिया	10	09	90.00	01	10.00	00	0.00
6.	होलागढ़	10	10	100.00	00	00.00	00	0.00
7.	जसरा	10	08	80.00	02	20.00	00	0.00
8.	करछना	10	07	70.00	02	20.00	01	10.00
9.	कौड़िहार	10	09	90.00	01	10.00	00	00.00
10.	कौंधियारा	10	09	90.00	01	10.00	00	00.00
11.	कोरॉव	10	08	80.00	01	10.00	01	10.00
12.	माण्डा	10	10	100.00	00	00.00	00	00.00
13.	मऊआइमा	10	09	90.00	01	10.00	00	00.00
14.	मेजा	10	09	90.00	01	10.00	00	00.00
15.	फूलपुर	10	08	80.00	01	10.00	01	10.00
16.	प्रतापपुर	10	09	90.00	01	10.00	00	00.00
17.	सैदाबाद	10	08	80.00	00	00.00	02	20.00
18.	शंकरगढ़	10	09	90.00	00	00.00	01	10.00
19.	सोरॉव	10	07	70.00	01	10.00	02	20.00
20.	उरूवा	10	09	90.00	00	00.00	01	10.00
	योग	200	170	85.00	19	9.50	11	5.50

विश्लेषण एवं व्याख्या (तालिका क्रमांक 2)

उपरोक्त तालिका क्रमांक 2 में शोध क्षेत्र इलाहाबाद जिले के न्यादर्श में चयनित समाजसेवियों से साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में आये परिवर्तनों की जानकारी हेतु प्रदत्तों का संकलन किया गया है।

उपरोक्त तालिका क्रमांक 2 के आँकड़े यह दर्शाते हैं, कि शोध क्षेत्र के न्यादर्श में चयनित कुल 200 समाजसेवियों में से 170 समाजसेवियों का यह मानना है, कि शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में सकारात्मक परिवर्तन आये हैं तथा 19 समाजसेवियों का यह मानना है कि शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में सकारात्मक परिवर्तन नहीं आये हैं। जबकि 11 समाजसेवियों

www.ignited.in

का यह मानना है, कि शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में कोई परिवर्तन नहीं आये हैं। इससे यह स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र के 85.00 प्रतिशत समाजसेवियों का यह मानना है, कि शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में सकारात्मक परिवर्तन आये हैं तथा 9.50 प्रतिशत समाजसेवियों का यह मानना है, कि शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में सकारात्मक परिवर्तन नहीं आये हैं। जबकि शोध क्षेत्र के 5.50 प्रतिशत समाजसेवियों का यह मानना है, कि शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में कोई परिवर्तन नहीं आये हैं।

निष्कर्ष:

तालिका क्रमांक 1 एवं 2 के विश्लेषण एवं व्याख्या से यह तथ्योद्घाटन होता है कि शोध क्षेत्र के 71.75 प्रतिशत नागरिकों का यह मानना है, कि शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में सकारात्मक परिवर्तन आये हैं तथा 20.00 प्रतिशत नागरिकों का यह मानना है, कि शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में सकारात्मक परिवर्तन नहीं आये हैं। जबकि शोध क्षेत्र के 8.25 प्रतिशत नागरिकों का यह मानना है, कि शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में कोई परिवर्तन नहीं आये हैं। शोध क्षेत्र के 85.00 प्रतिशत समाजसेवियों का यह मानना है, कि शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में सकारात्मक परिवर्तन आये हैं तथा 9.50 प्रतिशत समाजसेवियों का यह मानना है, कि शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में सकारात्मक परिवर्तन नहीं आये हैं। जबकि शोध क्षेत्र के 5.50 प्रतिशत समाजसेवियों का यह मानना है, कि शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में कोई परिवर्तन नहीं आये हैं। इस प्रकार यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में सकारात्मक परिवर्तन आये है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

कपिल, एच0के0 (1987) अनुसंधान विधियाँ, हर प्रसाद भार्गव, प्रकाशन, आगरा।

पाठक, पी.डी. (2007) भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें इक्कीसवाँ संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

प्रिया, नीरज (2006)- शिक्षक सामाजिक परिवर्तन का अभिकर्ता ? भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन.सी. ई. आर. टी. वर्ष 24, अंक-3, पृष्ठ - 15-26।

बसु, दुर्गादास (1997) - भारत का संविधान एक परिचय, सातवां संस्करण, प्रेंटिस हाल आफ इंडिया, प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।

मिश्र गिरीश्वर (2017) शिक्षा के साथ बंद हो मजाक, दैनिक जागरण, आगरा, गुरूवार 8 जून, 2017।

दुबे, श्यामाचरण, (1994) - शिक्षा समाज और भविष्यः राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रा. लि. नई दिल्ली।

रूहेला, सत्यपाल (1992) - भारतीय शिक्षा का समाजशास्त्र, चतुर्थ संस्करण, राजस्थान, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।

राय पारसनाथ (2004) अनुसंधान परिचय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल आगरा।

Corresponding Author

Nirmal Chand Pandey*

Research Scholar, Department of Sociology, Swami Vivekanand University, Sagar (M.P.)